५. जूलिया

– अंतोन चेखव

नौकरीपेशा अभिभावकों को अपने बच्चे शिशु–पालन केंद्र में रखने पड़ते हैं–इस संदर्भ में चर्चा कीजिए :–

संभाषणीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● बच्चों को केंद्र में रखने के कारणों पर चर्चा करें । ● बच्चों को वहाँ भेजने पर उनके मन में जो विचार आते होंगे– स्पष्ट करने के लिए कहें । ● इस समस्या का हल पूछें ।

[एकांकी में गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा, विवशता का सजीव चित्रण और शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश है ।]

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है ।)

जूलिया : **(दबे स्वर में)** आपने मुझे बुलाया था मालिक ?

गृहस्वामी : हाँ हाँ ..... बैठ जाओ जूलिया .... खड़ी मत रहो ।

जूलिया : **(बैठती हुई)** शुक्रिया ।

गृहस्वामी : जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ । मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे भी नहीं माँगोगी । इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ । हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न ?

जूलिया : **(विनीत स्वर में)** जी नहीं मालिक, चालीस रूबल ।

गृहस्वामी : नहीं भाई, तीस ... ये देखो डायरी, **(पन्ने पलटते हुए)** मैंने इसमें नोट कर रखा है । मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ । तुमसे पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल ही देता था । अच्छा, तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं ।

जूलिया : **(दबे स्वर में)** जी नहीं, दो महीने पाँच दिन ।

गृहस्वामी : क्या कह रही हो जूलिया ? ठीक दो महीने हुए हैं । भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है । हाँ, तो दो महीने के बनते है–अंऽऽ... साठ रूबल । लेकिन साठ रूबल तभी बनते हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो ... तुमने इतवार को छुट्टी मनाई है । उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया । सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गई हो .... और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने के लिए ले जाना कोई काम नहीं होता .... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं । ठीक है न ?

जूलिया : **(दबे स्वर में)** जी, आप कह रहे हैं तो.. ठीक **(रुक जाती है)** ।

गृहस्वामी : अरे भाई .... मैं क्या गलत कह रहा हूँ ... हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ यानी बारह दिन तुमने काम नहीं किया

परिचय

जन्म : २९ जनवरी १८६० तगान रोग, रूस **मृत्यु** : १५ जुलाई १९०४

परिचय : महान रूसी साहित्यकार अंतोन चेखव प्रसिद्ध कथाकार और नाटककार थे । उनकी कहानियों में सामाजिक कुरीतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है ।

प्रमुख कृतियाँ : ए ड्रीरी स्टोरी, द वाइफ (उपन्यास) अन्ना ऑन नेक, अ बैड बिजनेस, द बर्ड मार्केट, ओल्ड एज, ग्रीषा आदि (कहानी)–इवानोव, द चैरी आर्चर्ड आदि (नाटक) ।

गद्य संबंधी

एकांकी : इसका आकार छोटा होने के कारण इसमें एक ही कथा होती है । इसकी कथा व संवाद आदि से अंत तक रोचक और आकर्षक होते हैं ।

प्रस्तुत एकांकी में रचनाकार ने दब्बूपन को त्यागकर अपने अधिकार, न्याय के लिए सजग रहने हेतु प्रेरित किया है ।

यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए । उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया पिछले हफ्ते शायद तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्‌टी दे दी थी, तो बारह और सात-उन्नीस । उन्नीस नागे हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नीस... कितने रहते हैं.. अम.. इकतालीस,.. इकतालीस रूबल ! ठीक है?

जूलिया : **(रुआँसी हो जाती है । रोते स्वर में)** जी हाँ ।

गृहस्वामी : **(डायरी के पन्ने उलटते हुए)** हाँ, याद आया... पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी । प्याली बहुत कीमती थी । मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है ।... मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है ... खैर मेरा भाग्य ! हाँ , तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा ... अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दिया और वहाँ किसी टहनी की खरोंच लगने से बच्चे की जैकेट फट गई । दस रूबल उसके गए । इसी तरह तुम्हारी लापरवाही की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नए जूते चुरा लिए ....
(रुक कर) तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं ?

जूलिया : **(मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए)** जी सुन रही हूँ ।

गृहस्वामी : हाँ ठीक है । अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभाल करना है । तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं । तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या नहीं ?... मैं ठीक कह रहा हूँ न !... तो जूतों के पाँच रूबल और कट गए ... और हाँ, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिए थे ।

जूलिया : **(लगभग रोते हुए)** जी नहीं, आपने कुछ नहीं ... **(आगे नहीं कह पाती)**

गृहस्वामी : अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ । तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी ? **(डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)**

जूलिया : **(आँसू पोंछती हुई)** आप कह रहे हैं तो आपने दिए ही होंगे ।

गृहस्वामी : **(कड़े स्वर में)** दिए होंगे नहीं-दिए हैं ... ठीक है । घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से ... अम... अम... बचे चौदह । क्यों हिसाब ठीक है न ?

जूलिया : **(आँसू पीती हुई काँपती आवाज में)** मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वो मुझे मालकिन ने दिए थे ... सिर्फ तीन रूबल । ज्यादा नहीं ।

गृहस्वामी : **(जैसे आसमान से गिरा हो)** अच्छा ! ... और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई तक नहीं । देखो, तुम न

लेखनीय

छोटे व्यवसायियों के साथ दिए गए मुद्दों के आधार पर वार्तालाप कीजिए और संवाद के रूप में लिखिए ।

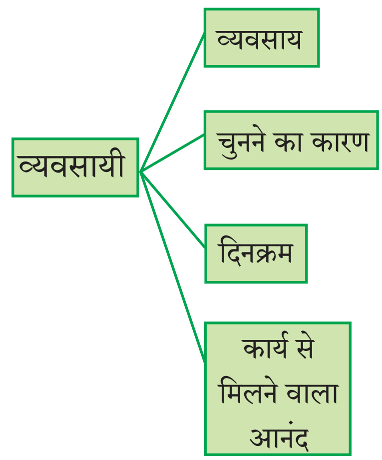

श्रवणीय

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले 'हास्य कवि सम्मेलन' की कविताएँ सुनिए और किसी एक कविता का आशय अपने मित्रों को सुनाइए ।

आसपास

घरेलू काम करने वाले लोगों की समस्याओं की सूची बनाइए ।

बताती तो हो जाता न अनर्थ !... खैर, देर से ही सही ... मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ ... **(डायरी खोलकर उसमें यूँ ही कुछ लिखता है)** हाँ तो, चौदह में से तीन और घटा दो-बचते हैं, ग्यारह रूबल **(देते हुए)** सँभाल लो ... गिन लो, ठीक है ना ?

जूलिया : **(काँपते हाथों से रूबल लेती है । काँपते ही स्वर में)** जी धन्यवाद !

गृहस्वामी : **(अपना गुस्सा नहीं सँभाल पाता, ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए)** तुम .... तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो जूलिया ? जबकि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है... तुम्हें धोखा दिया है ... तुम्हारे पैसे हड़प लिए हैं ... और तुम ... तुम इसके बावजूद मुझे धन्यवाद दे रही हो ! **(गुस्से में आवाज काँपने लगती है ।)**

जूलिया : जी हाँ मालिक ...

गृहस्वामी : **(गुस्से से तुतलाने लगता है)** 'जी हाँ मालिक ! जी हाँ मालिक ! ... क्यों ? क्यों जी हाँ मालिक ....'

जूलिया : **(डर जाती है भयभीत स्वर में)** क्योंकि इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया ... आप कुछ तो दे रहे हैं ।

गृहस्वामी : **(क्रोध के कारण काँपते, उत्तेजित स्वर में)** उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा तक नहीं दिया जूलिया, मुझे ये बात जानकर जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा है.... **(स्वर धीमा कर)** जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मजाक किया ... पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था । देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा नहीं मारूँगा... **(जेब से निकाल कर)** ये हैं तुम्हारे अस्सी रूबल ।.... मैं अभी इन्हें तुम्हें दूँगा ... लेकिन इससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहूँगा-'जूलिया, क्या ये जरूरी है कि इनसान भला कहलाने के लिए, इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाए कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे ? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियाँ सहता जाए ? नहीं जूलिया, नहीं ... इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा । अपने को बचाए रखने के लिए, तुम्हें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा । अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा पूरी शक्ति के साथ ... मत भूलो जूलिया, इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है.. कोई स्थान नहीं है ..।'

—०—

पठनीय

किसी अन्य पाठ्यपुस्तक से एकांकी पढ़िए ।

मौलिक सृजन

'जूलिया की जगह आप होते तो' ..... विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

पठित गद्यांश पर आधारित कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए

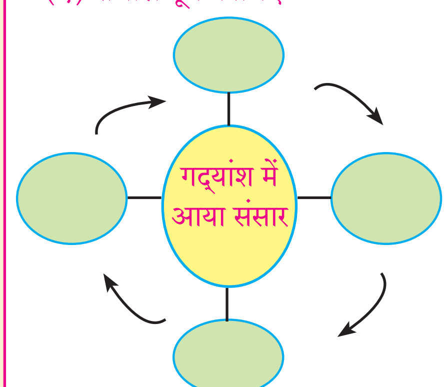

(२) कारण लिखिए :-

(क) गृहस्वामी द्वारा जूलिया से माफी माँगना

(ख) गृहस्वामी से जूलिया को संसार के साथ लड़ने के लिए कहना

(३)(क) परिच्छेद में प्रयुक्त कोई एक मुहावरा ढूँढ़कर उसका सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(ख) 'पर' शब्द के दो अर्थ लिखिए ।

(४)'संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है', इसपर लगभग आठ से दस वाक्यों में अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

रूबल (सं.) = रूस की मुद्रा/चलन
निर्मम (वि.) = निर्दयी
भीरु (वि.) = डरपोक
बोदा (वि.) =मूर्ख, गावदी, सुस्त
नागा (पुं.अ.) = वह दिन जिस दिन काम न किया हो

मुहावरे

ठग लेना = धोखा देना
हड़प लेना = बेईमानी से अधिकार कर लेना दूसरे की वस्तु हजम कर जाना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) संजाल :

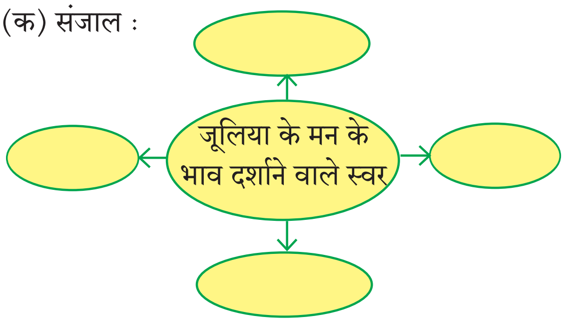

(ख) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो :
(१) वान्या (२) रुबल

(२) पाठ में प्रयुक्त अंकों का उपयोग करके मुहावरे लिखिए ।

(३) कई बार अज्ञान के कारण गरीबों को ठगा जाता है यह देखकर मेरे मन में विचार आए ....

8DFHYU

पाठ से आगे

परिचारिका पाठ्यक्रम नर्सिंग कोर्स संबंधी जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कीजिए और आवश्यक अर्हता संबंधी चर्चा करें ।

भाषा बिंदु

नीचे दिए गए चिह्नों के सामने उनके नाम लिखिए तथा वाक्यों में उचित विरामचिह्न लगाइए :-

विरामचिह्न

क्र.	चिह्न	नाम	वाक्य
१.	-		१. स्त्री शिक्षा को लेकर लेखक के क्या विचार थे
२.	.		२. श्याम तुम आ गए
३.	______		३. मोहन बोला तुमने जो कुछ कहा ठीक है
४.	[ ]		४. जीवन संग्राम में सब लड़ रहे हैं कुछ जीतेंगे कुछ हारेंगे
५.	"......."		५. भरत भैया ऐसा ना कहो
६.	,		६. अरे क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ
७.	!		७. जी धन्यवाद
८.	;		८. इसके अलावा तुमने तीन छुट्टियाँ और ली है ठीक है न
९.	( )		९. अच्छा और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई तक नहीं
१०.	।		१०. आप कह रहे हैं तो आप ने दिए ही होंगे

रचना बोध

....
....
....